(समाजशास्त्र)

Sociology - III (H) (पंचमपत्र)

सामाजिक विचारों का इतिहास.

(20

कार्ल मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त —

Dr. Arun Kumar Ranojev
Dept of Sociology

मार्क्स के अनुसार सामाजिक परिवर्तन का मूल कारण उत्पादन प्रणाली (Mode of Production) मे परिवर्तन है। उत्पादन प्रणाली को वे समाज की आर्थिक संरचना (Economic structure) कहते है। उनके अनुसार जब उत्पादन प्रणाली मे परिवर्तन होता है तो समाज मे परिवर्तन दिखाई देता है। इस तरह मार्क्स अपने सम्पूर्ण सिद्धान्त को आर्थिक आधार पर केन्द्रित करते है तथा भौतिकवाद को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देते है।

- मार्क्स के अनुसार परिवर्तन की शुरुआत के साधनो (means of Production) मे परिवर्तन से होती है, इस साधन मे प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है प्रौद्योगिकी मे परिवर्तन से श्रमशक्ति (Labour Power) मे परिवर्तन होता है, उत्पादन के साधन एवं श्रम शक्ति मे परिवर्तन के साथ उत्पादन शक्ति (Forces of Production) परिवर्तन हो जाती है। उत्पादन शक्ति मे परिवर्तन मालिक एवम् सर्वहारा — (मजदूर) के बीच उत्पादन ~~[illegible]~~ संबंधो (Relation of Production) को परिवर्तित करने को मजबूर करता है जिससे उत्पादन प्रणाली भी परिवर्तित हो जाती है एवम् समाज मे परिवर्तन दिखाई देने लगता है।

प्रथम अवस्था आदिम साम्यवाद :— जिसमे लोग कंद तथा शिकार पर अपना जीवन निर्वाह करते थे उस समय उत्पादनो के साधनो पर व्यक्तिगत अधिकार का अभाव था। इसलिए न तो कोई वर्ग था, न ही किसी प्रकार का शोषण

द्वितीय अवस्था - प्राचीन समाज की है जिसमे दास प्रथा का जन्म हुआ तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति का आविर्भाव हुआ जिससे वर्ग विभेद आरम्भ हुआ।

तृतीय अवस्था - सामंतवाद युग - की है जिसमे सत्ता पर राजाओ का अधिकार था. जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण भूमि सामन्तो मे विभाजीत कर दी। सामन्त (Lord) का पूर्ण अधिकार भूमिहीन कृषको पर होता था जिन्हे मार्क्स अर्ध-दास कहते है।

— 2

चतुर्थ अवस्था- पूँजीवाद (capitalist Society) की है जो औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अस्तित्व मे आयी है। इसमे उत्पादन अत्यधिक हुआ, किन्तु — बेकारी फैलने के कारण वेतन की दर घटी और पूँजीपति एवं सर्वहारा का अस्तित्व मे आया

उल्लेखनीय है कि मार्क्स ने अतीत से वर्तमान तक के चार समाजो के साथ भविष्य के दो समाजो समाजवाद एवं साम्यवाद की भी चर्चा की।

मार्क्स के अनुसार यदि ऐतिहासिक रूप से देखे तो जैसे-2 उत्पादन की प्रणाली बदलती गई वैसे वैसे समाज बदले। परन्तु द्विकक्षीय व्यवस्था बनी रही जिसमे एक वर्ग-शोषक था एवम् दूसरा शोषित

मार्क्स ने पूँजीवादी समाज मे पूर्व के समाज के दास एवम् कृषि श्रमिको की स्वय मे की कहा क्योकि उनकी आर्थिक एवम् सामाजिक परिस्थितियाँ तो समान थी परन्तु उनमे चेतना का अभाव था। इसलिए वे असगठित थे एवम् वर्ग-विरोध की कोई-सघर्ष तक नही ले जा सके। किंतु मार्क्स कहते है कि पूँजीवाद समाज मे सघर्ष होगा, क्योकि यह समाज कई अर्थो मे अपने अतीत के समाज से भिन्न है।

पूँजीवाद समाज मे उत्पादन लाभ के लिए होता है; जबकि अतीत के समाज मे उपभोग के लिए था। साथ ही इस समाज मे उत्पादन का मशीनीकरण हो चुका है जिससे श्रमिक वर्ग के महत्व मे कमी आई है। इस समाज मे पूँजीपतियो एवं सर्वहारा के बीच नकद का सबंध है जिससे दोनो वर्गो मे किसी तरह का भावनात्मक सास्कृतिक एवं परंपरागत जैसे सबंध नही है।

उद्योगपतियो मे आपसी प्रतिस्पर्धा तथा लाभ प्राप्त करने की मनोवृत्ति के कारण श्रमिक हासिए पर आ गया है। अधिक मशीनीकरण के कारण इस युग मे श्रम का महत्व कम हो गया है जिससे श्रमिको मे अलगाव की भावना उत्पन्न हो रही है।

मार्क्स कहते है कि जैसे-2 पूंजीपति अर्थव्यवस्था पर अपनी पकड़ बनाता जाएगा वैसे-2 अधोसंरचना जैसे धर्म कानून आदि) को भी उतना ही अधिक अपने नियंत्रण मे करता जाएगा। इसके पश्चात पूंजिपति जो चाहेगा वही करेगा और श्रमिको की सुनवाई नही होगी।

मार्क्स कहते है कि यह स्थिति श्रमिको मे चेतना को उत्पन्न करेगी। चूंकि श्रमिको के शोषण का स्वरूप जीवन शैली एवम् समस्याएं जैसी है, अतः उनके चेतना का निर्माण होता है अतः यह चेतना श्रमिको को ध्रुवीकृत होने का आधार का प्रदान करेगी तथा इस युग मे वंचित वर्ग स्वयं मे वर्ग से स्वयं के लिए वर्ग मे परिवर्तित हो जाएगा। तथा उसे प्राप्त करने के लिए संगठित एवं सक्रिय होगा। इस ध्रुवीकरण के बाद समाज दो महान वर्गो पुंजीवा एवम् सर्वहारा मे विभाजित हो जाएगा और अन्ततः खूनी संघर्ष एव क्रांति होगी। जिसमे विजय सर्वहारा की होगी। मार्क्स कहते है कि रक्त रंजित क्रांति के बाद कुछ समय के लिए सर्वहारा की तानाशाही स्थापित होगी जिसे वे समाजवाद कहते है अतः सर्वहारा अपनी सत्ता छोड़कर जन सामान्य मे शामिल हो जाएगा।

यह साम्यवादी समाज होगा। मार्क्स के अनुसार इस युग मे परिवार तथा जनता की धर्म का निषेध हो जाएगा। इस युग मे न तो वर्ग होगा और न ही निजी संपति। सबको अपनी रुचि के अनुसार कार्य मिलेगा तथा आवश्यकता के अनुसार पूर्ति (वेतन) पुलिस, प्रशासन, सेना, आदि संस्थाए समाप्त हो जाएगी व सामाजिक परिवर्तन का चक्र सदैव के लिए रुक जाएगा।

कहा जा सकता है कि मार्क्स का विश्लेषण दोष रहित नही है, फिर भी पूंजीवाद पर लगाम लगाने एवं उसे मानवतावादी स्वरूप प्रदान करने मे मार्क्स के विचारो की महत्वपूर्ण भूमिका है।

- मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग संघर्ष ऐतिहासिक, भौतिकवाद की ही उपपत्ति है। पहला वर्ग सदैव ही दूसरे वर्ग का शोषण करता है मार्क्स के अनुसार समाज मे शोषक और शोषित ये दो वर्ग सदा ही आपस मे संघर्षरत रहते है इनमे समझौता कभी संभव नही है।

From - Dr Arun Kumar
Reader
Shenshah College Dept of Sociology